ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292RNI
REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 225-233**
I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-IV, Issues-34, YEAR-Oct-Dec. 2024

बिहार के पश्चिमी चंपारण जिला के थारु जनजाति के व्यावसायिक संरचना में परिवर्तनः एक भौगोलिक अध्ययन

1. कुमार गौरव
2. प्रो0 (डॉ0) हीरा लाल सिंह

1. शोध अध्येता, एस॰ आर॰ एफ॰ स्नातकोत्तर भूगोल विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया 2. अवकाशप्राप्त विश्वविद्यालय प्रोफेसर एवं अध्यक्ष स्नातकोत्तर भूगोल विभाग पाटलिपुत्रा विश्वविद्यालय, पटना (बिहार) भारत

Received-20.12.2024, Revised-26.12.2024, Accepted-29.12.202 **E-mail : aaryavrt2013@gmail.com**

सारांशः सामान्य तौर पर ऐसा माना जाता है कि किसी भी जनजातिय समाज का व्यवसाय मुख्य रूप से प्राथमिक क्षेत्र पर आधारित होते हैं। वे परंपरागत कृषि पद्धति के साथ–साथ पशुपालन भी करते हैं। सभ्यता के आरंभ में जिनका जीवन–आधार वन्य खाद्य पदार्थ संग्रहण पर आधारित था जो धीरे–धीरे पशुपालन के साथ–साथ जीवकोपार्जन कृषि के रूप में परिवर्तित होने लगा है। अतः वर्तमान में उनके व्यावसायिक संरचना में पर्याप्त रूप से परिवर्तन देखने को मिल रहा है।जिसका मुख्य कारण साक्षरता में वृद्धि, सामान्य जनसमाज से मेल–जोल, वैश्वीकरण, आधुनिकीकरण आदि है। अतः बिहार के पश्चिमी चंपारण के थारु जनजाति के संदर्भ में यह परिवर्तन कितना सार्थक है, यह शोधार्थी ने जानने का प्रयास किया है। अतः इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य बिहार के थारु जनजाति के व्यावसायिक संरचना में परिवर्तन की व्याख्या करना है। यह अध्ययन मुख्य रूप से प्राथमिक आंकड़ों पर आधारित है तथा संबंधित आंकड़े प्रश्नावली विधि से एकत्र किए गए हैं। उपलब्ध आंकड़ों का उपयुक्त सांख्यिकी विधियों के माध्यम से विश्लेषण किया गया है तथा परिणाम को यथोचित रेखाचित्र अथवा वृत्त चित्र से दिखाने का प्रयास किया गया है।

कुंजीभूत शब्द– अनुसूचित जनजाति, थारू, तराई क्षेत्र, थरूहट, व्यावसायिक संरचना, साक्षरता में वृद्धि, आधुनिकीकरण

परिचय–भारत सरकार थारू लोगों को अनुसूचित जनजाति के रूप में मान्यता देती है। उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखंड में 1967 तथा बिहार में 2003 में अनुसूचित जनजाति के रूप में मान्यता देती हैं। भारत में थारु जनजाति सिर्फ तीन राज्यों में बिहार, उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड में पाए जाते हैं। सबसे ज्यादा आबादी बिहार में लगभग 45प्रतिशत ,उत्तर प्रदेश में 29प्रतिशत और उत्तराखंड में 25ः के आसपास पाई जाती है। भारत में थारु जनजाति बिहार के पश्चिमी चंपारण, उत्तराखंड के उधम सिंह नगर एवं उत्तर प्रदेश के खीरी, बलरामपुर, बहराइच, श्रावस्ती, लखनऊ, महाराजगंज, उन्नाव एवं कानपुर नगर में मुख्य रूप से पाए जाते हैं । पश्चिम चंपारण जिले एवं बिहार में यह सबसे बड़ी जनजातीय समूह है।

इस जनजाति का मुख्य व्यवसाय गहन जीविकोपार्जन कृषि के साथ पशुपालन हैं। साथ ही साथ आखेट या शिकार करना, एवं वन से खाद्य संग्रह कर जीवन निर्वाह की पुरातन पद्धति को अपनाते हैं। इसके अतिरिक्त रस्सी एवं चटाई निर्माण, जंगल से लकड़ी काटने एवं कृषक मजदूर का कार्य करते हैं। परंतु विगत वर्षों में उनके व्यावसायिक संरचना में पर्याप्त रूप से परिवर्तन देखने को मिलता हैं।

शोध समीक्षा– जनजातियों के सामाजिक आर्थिक एवं सांस्कृतिक विशेषताओ का अध्ययन भूगोलविदों का भी आकर्षण का विषय रहा हैं। कुछ विद्वानों के उल्लेखनीय कार्यों की यहाँ चर्चा की गई हैं। चंद्रमौली,(1969) ने आंध्र प्रदेश के जनजातियों में सामाजिक–आर्थिक परिवर्तन के फलस्वरुप व्यावसायिक परिवर्तन भी पाये हैं। विद्यार्थी (1970) के अनुसार नगरीकरण के फसलस्वरूप जनजातियों में सांस्कृतिक परिवर्तन के साथ–साथ आर्थिक परिवर्तन भी महत्वपूर्ण रूप से हुए हैं । एग्रो इकोनामिक रिसर्च सेंटर (1975) ने मध्य प्रदेश के छिंदवाड़ा जिला के आठ जनजातियों के गावों में अध्ययन किया, जिसमें संसाधन उपलब्धता, उत्पादन, रोजगार एवं आय संबंधित पहलुओ का अध्ययन किया गया हैं। जिसमें यह पाया कि सर्वेक्षित जनजातियों में 51ः से अधिक कार्यशील जनसंख्या एवं गैर–जनजातियों में 6ः से अधिक कार्यशील जनसंख्या दैनिक मजदूर के रूप में कार्य करते हैं, चाहे वह कितनी भी भू–जोत पर अधिकार रखते हैं। गुनेरतने (2002) ने नेपाल के चितवन और डांग जिले के थारु जनजाति में प्रवास एवं परिणाम स्वरुप व्यावसायिक परिवर्तन की चर्चा की है। पश्चिमी चंपारण के थारू जनजाति में सामाजिक–सांस्कृतिक परिवर्तन के साथ–साथ व्यावसायिक परिवर्तन भी हुए हैं। इन व्यावसायिक परिवर्तन का मुख्य कारण समाज के साथ सम्मिश्रण, प्रवास, शिक्षा का विस्तार आदि है (कुमार, 2009 एवं कुमारी, 2015)। शिक्षा के वृद्धि एवं रोजगार के नए अवसर मिलने के कारण इस जनजाति के में व्यावसायिक परिवर्तन होने लगे हैं (मोहम्मद 2017)। नगरीकरण तथा आधुनिकरण के कारण थारु जनजाति में व्यावसायिक परिवर्तन होने लगा है (कुमार 2018)। यादव (2019) ने जनजातीय महिलाओं विशेष कर थारु महिलाओं के सामाजिक–सांस्कृतिक परिवर्तन के फलस्वरुप उनके व्यावसायिक परिवर्तन के साथ–साथ आर्थिक जीवन में व्यापक परिवर्तन पाया है। जबकि नेपाल के बांके जिले में थारु जनजाति में मजदूर प्रवासन का मुख्य कारण आर्थिक जीवन में परिवर्तन हैं, फलतः व्यावसायिक परिवर्तन होने लगा हैं(थारु, 2020)।

अध्ययन का उद्देश्य–अध्ययन का मुख्य उद्देश्य पश्चिम चंपारण जिले के थारु जनजाति के व्यावसायिक संरचना में परिवर्तन का अध्ययन करना है।

अध्ययन क्षेत्र– पश्चिम चंपारण जिला बिहार राज्य के उत्तर पश्चिम भाग में नेपाल से सटे सीमा के साथ स्थित है। इसका अक्षांशीय विस्तार $26^{0}40'15'$ से $27^{0}32'15'$ उत्तरी अक्षांश तथा देशांतरीय विस्तार $83^{0}50'30'$ से $50^{0}45'30'$ पूर्वी देशांतर के बीच स्थित है। जिसका कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 5228 किमी2 है। जनगणना 2011 के अनुसार यहां कुल 3935042 व्यक्ति जिसमें 2061110 पुरुष एवं 1873932 महिला है। यहां जनसंख्या घनत्व 1302 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है जबकि जनजातीय जनसंख्या घनत्व 895 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है यहां लिंगानुपात 953 महिला प्रति हजार पुरुष है जबकि जनजातीय लिंगानुपात 952 महिला प्रति हजार पुरुष है यहां कुल साक्षरता दर 44.71प्रतिशत है, जिसमें पुरुष 62.02प्रतिशत एवं महिला 37.5प्रतिशत है। जिले के कुल जनसंख्या का 6. 35प्रतिशत जनजातीय जनसंख्या है जिसमें कुल व्यक्ति 250046 हैं जिसमें 127680 पुरुष तथा 122366 महिला हैं।

थारु जनजाति की सर्वाधिक जनसंख्या बिहार के पश्चिमी चंपारण जिले में है। अतः अध्ययन के रूप से बिहार के थारू जनजाति का विशेष अध्ययन किया गया है। पश्चिम चंपारण जिले में थारु जनजाति की जनसंख्या सर्वाधिक पाई जाती है, पूरे बिहार का 99.44प्रतिशत इस जिले में वास करती हैं, जो कि बिहार के कुल जनजातीय जनसंख्या का 18.71प्रतिशत है। यहां इनकी संख्या 159,939 व्यक्ति हैं जिसमें 81,236 पुरुष एवं 78,703 महिलाएं हैं। पश्चिम चंपारण जिले में थारू की जनसंख्या कुल जनजातीय

ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292RNI
REG. NO. UPBIL/2014/66218
I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-IV, Issues-34, YEAR-Oct-Dec. 2024

जनसंख्या का 65.5प्रतिशत है। दूसरे स्थान पर उरांव जनजाति हैं,जो की 16.3 प्रतिशत है। तीसरे, चौथे और पांचवे स्थान पर क्रमशः गोंड खरवार और चेरों है। यह पांच प्रमुख जनजातियां हैं, जो की कुल जनसंख्या का लगभग 95ः है, शेष 5प्रतिशत में अन्य सभी 20 जनजातियां हैं। जनगणना वर्ष 2001 तक इस जिले की सबसे बड़ी जनजाति उराव थी, जो की कुल जनसंख्या का लगभग 63ः थी। परंतु 2003 में थारु को जब अनुसूचित जनजाति का दर्जा मिल गया, उसके पश्चात जनगणना 2011 में थारू जनजाति जिले की सबसे बड़ी जनजाति हो गई। जनगणना 2011 के अनुसार यहां कुल थारु जनसंख्या 159040 व्यक्ति हैं, जिसमें 80735 पुरुष एवं 78305 महिला हैं। यहाँ कुल 99.70 प्रतिशत थारु ग्रामीण हैं शेष 0.30 प्रतिशत नगरीय हैं। यहां जनजातीय जनसंख्या घनत्व 30 व्यक्ति प्रति किमी2 है जबकि जनजातीय लिंगानुपात 969 महिला प्रति हजार पुरुष है। इनकी कुल साक्षरता दर 52.78प्रतिशत है जिसमें पुरुष साक्षरता 59.06ः एवं महिला साक्षरता 40.94ः है। पश्चिम चंपारण जिले में जनजातियों का संकेंद्रण तराई एवं तराई से सटे प्रखंडों में पाई जाती हैं। सबसे अधिक जनजातीय जनसंख्या बगहा, सिधाव, रामनगर, गौनाहा एवं नरकटियागंज प्रखंड में पाए जाते हैं। जनजातियों का मुख्य संकेन्द्रण जिले में 100 मीटर की सम्मोच रेखा के उत्तर में पाए जाते हैं। पश्चिम चंपारण जिले में कुल 842 गांव में थारू जनजाति पाए जाते हैं, जिनमें से 303 गांव में थारू जनजाति के परिवार अन्य जनजाति परिवारों के साथ वास करती हैं। यहाँ थारु जनजाति का संकेंद्रण गंडक एवं मसान दोनों नदियों के बहाव क्षेत्र में जिले के जंगल क्षेत्र के साथ सटा हुआ है, जहां थारु बसने वाले सबसे बड़ी जनजाति समूह के रूप में संकेंद्रित है।

सारणी – 1 पश्चिम चंपारण जिले में थारू जनजाति, 2011

क्र सं	जिला	व्यक्ति		पुरुष		महिला	
		कुल	प्रतिशत	कुल	प्रतिशत	कुल	प्रतिशत
1	**पश्चिमी चंपारण**	**159,040**	**99.44**	**80,735**	**50.76**	**78,305**	**49.24**
2	मधुबनी	409	0.26	223	54.52	186	45.48
3	अररिया	221	0.14	122	55.2	99	44.8
4	पटना	117	0.07	70	59.83	47	40.17
5	मुजफ्फरपुर	28	0.02	17	60.71	11	39.29
6	सीतामढ़ी	22	0.01	12	54.55	10	45.45
7	गया	22	0.01	13	59.09	9	40.91
8	शेष सभी जिले	80	0.05	44	0.05	36	0.05
	बिहार (थारु)	**159,939**	**100**	**81,236**	**50.79**	**78,703**	**49.21**
	बिहार (कुल जनजाति)	1,336,573	11.97	682,516	51.06	654,057	48.94

स्रोत : भारतीय जनगणना 2011

आंकड़ों के स्रोत एवं विधि तंत्र : यह शोध एक परीक्षणात्मक शोध है, इसके अंतर्गत थारू जनजाति के विशेष संदर्भ में व्यावसायिक संरचना का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। प्रथम स्तर पर सभी प्रखंडों के अनुसूचित जनजाति बहुल सभी प्रखंडों से केवल तीन प्रखंड सिधाव, रामनगर एवं गौनाहा का चयन किया गया हैं। उसके उपरांत प्रति गांव 70 परिवारों से संबंधित आंकड़े एकत्र किए गए हैं। प्राथमिक आंकड़ों का संग्रहण – प्रश्नावली विधि के द्वारा एकत्रित किया गया है। द्वितीयक आंकड़ों का संग्रह भारतीय जनगणना 2011 से लिया गया है।

प्रतिदर्श गांव का चयन एवं चयन का आधारः द्वैनिदर्शन विधि (च्नतचवेपअम त्ंदकवउ ैउचसपदह) के आधार पर, कुल पांच गांव का चयन किया गया हैं। जो की थारु बहुल प्रथम तीन प्रखंडों दृ सिधाव, रामनगर एवं गौनाहा से लिए गए हैं।

सारणी – 2 प्रतिदर्श गाँव की सूची

क्र सं	गाँव का नाम	प्रखण्ड	जिला मुख्यालय से दूरी	प्रखण्ड मुख्यालय से दूरी	क्षेत्रफल (हे0)	जनसंख्या 2011
1	नौरंगिया	सिधाव	87	22	326.6	3058
2	खम्हौरा	सिधाव	87	22	161.4	1522
3	मधुबनी	रामनगर	50	49	241.0	1385
4	बेलसंडी	गौनाहा	62	27	271.1	2356
5	जमुनिया	गौनाहा	58	21	227.0	2915

स्रोत : शोधार्थी द्वारा आकलित।

प्रतिदर्श गांवों के चयन के निम्नलिखित आधार हैं – (1) कुल जनसंख्या में थारु जनसंख्या का प्रतिशत(कम से कम 50 प्रतिशत), (2) थारु जनसंख्या में साक्षरता का प्रतिशत(कम से कम 50 प्रतिशत), (3) थारु जनजाति में कृषक का प्रतिशत (कम से कम 20 प्रतिशत, (4) जिला मुख्यालय से दूरी, (5) प्रखण्ड मुख्यालय से दूरी, (6) मुख्य सड़क से दूरी, (7) रेलवे स्टेशन से दूरी, (8) जंगल से दूरी, (9) कम से कम एक शैक्षणिक संस्थान एवं (10) कम से कम सप्ताह में दो बार हाट/बाज़ार का लगना ।

व्याख्या एवं विश्लेषण रू

सर्वेक्षित गांव में प्रतिदर्श परिवारों की व्यावसायिक संरचना को निम्नलिखित 9 वर्गों में विभाजित किया गया हैं दृ (1) कृषक मजदूर, (2) अन्य मजदूर, (3) कृषक, (4) कृषक सह व्यवसायी, (5) व्यवसायी, (6) घरेलू उद्योग एवं अन्य व्यवसाय, (7) सरकारी सेवाएं, (8) अन्य एवं निजी सेवाएं, (9) सेवाएं एवं कृषि ।

सारणी सं–3 एवं 4 में सर्वेक्षित गांव में प्रतिदर्श परिवारों की व्यावसायिक संरचना दर्शाया गया हैं, जहां वर्ष 2002–03 एवं 2021–22 के आधार पर तुलना करने का प्रयास किया गया है। वर्ष 2002–03 में सबसे अधिक थारू परिवार(23.43प्रतिशत) कृषि का कार्य करते थे, उसके बाद कृषि एवं व्यवसाय में 20.86 प्रतिशत, परिवार लगे होते थे। जबकि कृषक मजदूर(10.29 प्रतिशत) और अन्य मजदूरों(14.86 प्रतिशत) को जोड़ दिया जाए तो सबसे अधिक 25.15 प्रतिशत के आसपास थारू जनजाति परिवार संलग्न है। इसके बाद सरकारी सेवाओं में 6 प्रतिशत के आसपास थारू परिवार संलग्न है जो कि कुल सारवेक्षित जनसंख्या के सिर्फ क्षेत्र से प्रतिशत है निजी सेवाओं में एक प्रतिशत से भी काम है जिसकी कृषि एवं अन्य सेवाओं के समानता पर सरकारी नौकरी को सम्मिलित किया गया है 7.114 प्रतिशत है विशुद्ध रूप से व्यवसाय करने वाले पारिवारिक की संख्या 9.5 प्रतिशत है जो कि पांचवें स्थान पर है सर्वाधिक

ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292RNI
REG. NO. UPBIL/2014/66218

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-IV, Issues-34, YEAR-Oct-Dec. 2024

सर्वेक्षित परिवारों के व्यावसायिक संरचना 2020 में देखा जाए तो पहले स्थान पर कृषक एवं व्यवसाय का स्थान आता है जो की 16.57: है दूसरे स्थान पर दूसरे स्थान पर कृषक मजदूर आते हैं जिनका प्रतिशत 22.86 है अन्य मजदूर 10.8 प्रतिशत है अन्य मजदूर एवं किस्सा मजदूरों को जोड़ दिया जाए तो 32.1 33: के आसपास हो जाते हैं इस प्रकार देखा जाए तो पिछले 20 वर्षों में कृषक मजदूर की संख्या में 6 प्रतिशत की वृद्धि हुई है वर्तमान में सरकारी सेवाओं में लगभग 11 प्रतिशत के आसपास परिवार है जबकि सेवाओं के साथ कृषि में 12 प्रतिशत है।

सारणी – 3 प्रतिदर्श परिवारों की व्यावसायिक संरचना, 2002–03

क्र० सं०	व्यवसायिक प्रतिशत	सर्वेक्षित गाँव का नाम											
		गौरिया	प्रतिशत	ऊंचगांव	प्रतिशत	मधुबनी	प्रतिशत	बेलहानी	प्रतिशत	जमुनिया	प्रतिशत	कुल	प्रतिशत
1	कृषक मजदूर	7	10	7	10	8	11.43	5	7.14	9	12.86	36	10.29
2	अन्य मजदूर	8	11.43	7	10	12	17.14	13	18.57	12	17.14	52	14.86
3	कृषक	19	27.14	16	22.86	14	20	16	22.86	17	24.29	82	23.43
4	कृषक सह व्यवसायी	14	20	18	25.71	15	21.43	12	17.14	14	20	73	20.86
5	व्यवसायी	4	5.71	9	12.86	7	10	9	12.86	5	7.14	34	9.71
6	घरेलू उद्योग व्यवसायी	3	4.29	4	5.71	7	10	5	7.14	6	8.57	25	7.14
7	सरकारी सेवा	7	10	3	4.29	3	4.29	6	8.57	2	2.86	21	6
8	निजी सेवक	0	0	0	0	0	0	0	0	2	2.86	2	0.57
9	सेवायें एवं कृषि	8	11.43	6	8.57	4	5.71	4	5.71	3	4.29	25	7.14
10	कुल	70	100	70	100	70	100	70	100	70	100	350	100

स्रोत : प्राथमिक सर्वेक्षण

सारणी – 4 प्रतिदर्श परिवारों की व्यावसायिक संरचना2022–23

क्र० सं०	व्यवसायिक वर्ग	सर्वेक्षित गाँव का नाम											
		गौरिया	प्रतिशत	ऊंचगांव	प्रतिशत	मधुबनी	प्रतिशत	बेलहानी	प्रतिशत	जमुनिया	प्रतिशत	कुल	प्रतिशत
1	कृषक मजदूर	12	17.14	18	25.71	17	24.29	15	21.43	18	25.7	80	22.86
2	अन्य मजदूर	8	11.43	5	7.14	5	7.14	7	10	13	18.6	38	10.86
3	कृषक	8	11.43	5	7.14	14	20	6	8.57	2	2.9	35	10
4	कृषक सह व्यवसायी	11	15.71	16	22.86	12	17.14	5	7.14	14	20	58	16.57
5	व्यवसायी	6	8.57	5	7.14	4	5.71	8	11.43	2	2.9	25	7.14
6	घरेलू उद्योग व्यवसायी	7	10	5	7.14	5	7.14	7	10	5	7.1	29	8.29
7	सरकारी सेवा	12	17.14	5	7.14	5	7.14	9	12.86	6	8.6	37	10.57
8	निजी सेवक	0	0	0	0	0	0	2	2.86	4	5.7	6	1.71
9	सेवायें एवं कृषि	6	8.57	11	15.71	8	11.43	11	15.71	6	8.6	42	12
10	कुल	70	100	70	100	70	100	70	100	70	100	350	100

स्रोत : प्राथमिक सर्वेक्षण

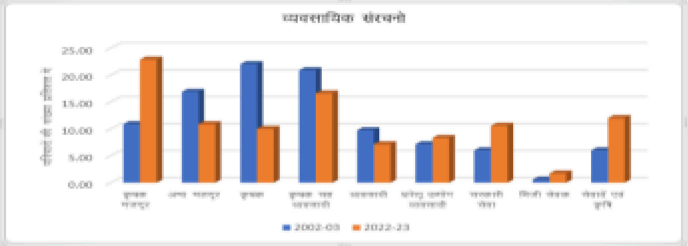

चित्र – 1

सारणी – 5 प्रतिदर्श परिवारों की व्यावसायिक संरचना में परिवर्तन, 2002–03 से 2022–23.

व्यवसायिक वर्ग	परिवारों की संख्या	प्रतिशत	परिवारों की संख्या	प्रतिशत	परिवारों की संख्या	प्रतिशत परिवर्तन
कृषक मजदूर	80	22.86	36	10.86	44	62.9
अन्य मजदूर	38	10.86	52	16.86	-14	-20.0
कृषक	35	10	82	22.00	-47	-67.1
कृषक सह व्यवसायी	58	16.57	73	20.86	-15	-21.4
व्यवसायी	25	7.14	34	9.71	-9	-12.9
घरेलू उद्योग व्यवसायी	29	8.29	25	7.14	4	5.7
सरकारी सेवा	37	10.57	21	6.00	16	22.9
निजी सेवक	6	1.71	2	0.57	4	5.7
सेवायें एवं कृषि	42	12	25	6.00	17	24.3

स्रोत : प्राथमिक सर्वेक्षण

ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292RNI
REG. NO. UPBIL/2014/66218

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-IV, Issues-34, YEAR-Oct-Dec. 2024

सारणी संख्या 5 में बस 20023 एवं 22 23 के बीच तुलनात्मक आंकड़े प्रदर्शित किए गए हैं इस आंकड़ों से इस तालिका से स्पष्ट होता है कि कृषक मजदूर, घरेलू उद्योग व्यवसाय, सरकारी सेवाओं, निजी सेवाओं और सेवाओं के साथ–साथ कृषि करने वाले परिवारों में वृद्धि हुई है जबकि कृषक मजदूर कृषक सा व्यवसाय में सिर्फ व्यवसाय में एवं अन्य मजदूरों की संख्या में कमी आई है सबसे अधिक वृद्धि कृषक मजदूर में की जनसंख्या में देखने को मिलती है जो की 63: के आसपास है जबकि सबसे अधिक कमी कृषकों की संख्या में हुई है जो जिसका मुख्य कारण है बदलते परिवेश में कृषि की कृषिगत भूमि को बेचकर गरीब किसान बाहर जाकर दैनिक मजदूर में काम करने लगे हैं अथवा जिनका परिवारों का भरण पोषण उसे जमीन का छोटा सा टुकड़ा करने में सक्षम नहीं था उसको बेचकर अन्य व्यवसाय में लग गया।

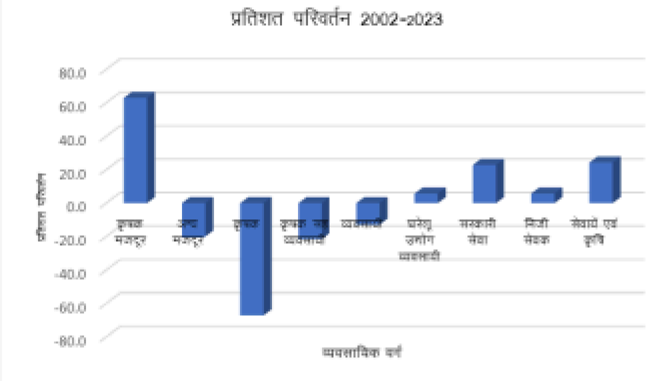

चित्र – 2

सारणी सं– 6 में थारु जनजातीय परिवारों में व्यावसायिक परिवर्तन की अवस्था को दिखाया गया है। इस सारणी से स्पष्ट है कि सबसे अधिक व्यवसायिक परिवर्तन लगभग 21: उत्तरदाता के द्वारा स्वयं किया गया है जबकि 16: परिवारों में व्यावसायिक परिवर्तन उनके पिता के द्वारा किया गया है। लगभग 15.43: उनके दादा के द्वारा एवं 11.71: उनके परदादा के द्वारा किया गया है। इस प्रकार थारु जनजातियों में व्यावसायिक परिवर्तन पहले से ही होता आ रहा हैं।

सारणी – 6 सर्वेक्षित परिवारों में व्यावसायिक परिवर्तन की अवस्था

प्रतिवर्तन का स्तर	कुल परिवार	प्रतिशत में
स्वयं	72	20.57
पिता	57	16.29
दादा	54	15.43
परदादा	41	11.71
कोई परिवर्तन नहीं	126	36.00
कुल	350	100.00

स्रोत : प्राथमिक सर्वेक्षण

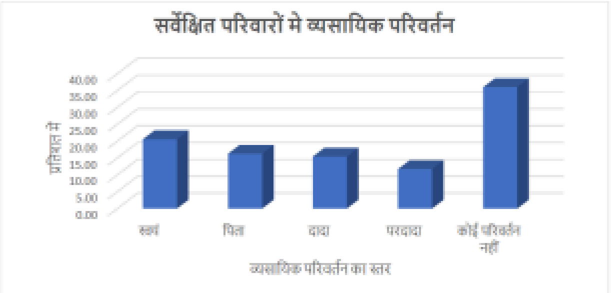

चित्र – 3

व्यावसायिक परिवर्तन हेतु उत्तरदायी कारक–पश्चिम चंपारण जिला के थारू जनजाति के व्यावसायिक संरचना में परिवर्तन हेतु कई कारक उत्तरदायी हैं जिनमें प्रमुख हैं – नई शासन व्यवस्था, औद्योगीकरण एवं नगरीकरण, वैश्वीकरण, आधुनिकीकरण, प्रवास, ऋणग्रस्तता, वन संरक्षण अधिनियम 1980 एवं एवं वन्य जीव संरक्षण अधिनियम 1972, आधुनिक शिक्षा एवं साक्षरता, राजकीय सेवाओं में आरक्षण, समन्वित थरूहट विकास प्राधिकरण आदि।

व्यावसायिक परिवर्तनों के परिणाम– उपरोक्त परिवर्तनों के परिणाम स्वरूप पश्चिमी चंपारण के थारु जनजाति के व्यावसायिक संरचना में कई बदलाव हुए हैं,

1. **पारंपरिक व्यवसाय से विमुख** – थारू जनजाति अपने परंपरागत व्यवसाय जैसे आकेतन एवं खाद्य संग्रहण पशुपालन मत्स्यायन आदि को छोड़ अन्य रोजगार छोड़ रहे हैं
2. **नए व्यवसाय में प्रवेश** – कार्य जनजाति अपने परंपरागत व्यवसाय को छोड़ कृषि लघु उद्योग सरकारी सेवाओं एवं बाजार आधारित अन्य व्यवसाय में प्रवेश कर रहे हैं

ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292RNI
REG. NO. UPBIL/2014/66218
I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-IV, Issues-34, YEAR-Oct-Dec. 2024

3. **आर्थिक विकास** – इन परिवर्तनों के परिणाम स्वरुप उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है तथा यह आधुनिक भौतिकवादी जीवन शैली को अपना रहे हैं
4. **सामाजिक एवं सांस्कृतिक बदलाव** – नए व्यवसाय के साधन इन्हें समाज के अन्य वर्गों के साथ मेल मिलाप को बढ़ाया है जिससे समाज के साथ इनका एकीकरण हो रहा है लेकिन सांस्कृतिक रूप से उनकी भिन्नता एवं अनुठापन खत्म हो रहा है जो थारू जनजाति के सामाजिक सांस्कृतिक आधार हेतु संतोषजनक नहीं है
5. **प्रवास** – नए रोजगार के तलाश में देश के बड़े नगरों– दिल्ली, मुंबई, कोलकाता, इलाहाबाद, लखनऊ, कानपुर, बैंगलुरु, चेन्नई, आदि नगरों की ओर प्रवास करते हैं। साथ ही साथ बेहतर जीवन यापन, शिक्षा, स्वास्थ्य, आदि के लिए भी प्रवास करते हैं किन्तु रोजगार के लिए प्रवास करने वालों की संख्या सर्वाधिक होती हैं।

निष्कर्ष–वर्तमान में थारु जनजाति में परंपरागत व्यवसाय को छोड़कर अन्य व्यवसाय अपनाने लगे हैं। कृषि एवं पशुपालन को छोड़कर सरकारी नौकरियां, व्यवसाय वगैरह करने लगे हैं । मुख्य रूप से शिक्षा के स्तर एवं साक्षरता में वृद्धि, शेष समाज के संपर्क में आने, रोजगार के अवसर मिलने के कारण तथा बिहार राज्य के सम्मानित थरूहट विकास प्राधिकरण के अंतर्गत थारू जनजाति के लोगों को प्रदत सुविधाओं के कारण उनके व्यावसायिक संरचना में परिवर्तन होने लगा है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Chandra Mowli (1969). Socio-Economic Change in the Tribes of Andhra. In: M. K. Chaudhari (ed.), Trends of Socio-Economic Change in India, pp. 199-221. Indian Institute of Advanced Studies: Shimla.
2. Vidyarthi, L.P. (1970): Socio-cultural Implication of Industrialisation in India, Planning Commission, New Delhi.
3. Guneratne, A. (2002). "The Tharu and the Tarai". Many tongues, one people: the making of Tharu identity in Nepal. Ithaca, New York: Cornell University Press. pp. 20–61.
4. Kumar, A., (2009), Pattern of Social Change Among The Tharus of West Champaran In Bihar, unpublished Ph. D thesis Jawaharlal Nehru University New Delhi- 110067 India. PP-169 -203
5. Kumari, M, (2015) Socio-Economic and Cultural Characteristics of Tribes in Paschim Champaran District, Bihar, unpublished Ph. D thesis Patna university, Patna, PP-197-224
6. Mohammed Arafat Hasan Rizvi & M. Shafey Kidwai, (2017)- Education, Employment and Quality of Life among undergraduates of the Indigenous Tharu tribe in Terai Region of Lakhimpur Kheri, Anthropological Bulletin 9 (2), 97-107, ISSN: 2348-4667
7. Rajeev kamal kumar, (2018), Impact of Urbanization and Modernization on the Tharus and the Oraons of West Champaran, Bihar, South Asian Anthropologist, 2018, 18(1): 73-86
8. Census of India, 2011
9. Yadav, Sangita (2019). Socio-Cultural status of Tribal Women: Special Focus on Tharus . Internat. J. Appl. Soc. Sci., 6 (8) : 2140-2143.
10. Tharu, Deepak (2020), THE IMPACT OF LABOUR MIGRATION ON THARU CULTURE, Advances in Anthropology and Sociocultura
11. अग्रवाल, साधना (1989) उत्तर प्रदेश के तराई क्षेत्र मे ं थारू जनजाति की आर्थिक स्थिति का विश्लेषणात्मक अध्ययन, शोध प्रबन्ध (अ0प्र0), रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय।
12. बिष्ट, बी0 एस0 1993 थारू जनजाति मे ं सामाजिक संगठन के स्वरूपएवं उनका आर्थिक जीवन पर प्रभाव, मानव, एन्थ्रोग्राफिक एण्ड फोक कल्चर सोसाइटी, लखनऊ।
13. बर्मन, बी.के. राय 1972 ट्राइब्ल डेमोग्राफी, इन ट्राइब्ल सिचुएशन इन इण्डिया, (ई.डी.) के. एस. सिंह. इण्डियन इन्स्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडी, शिमला। पृ.सं. 5
14. B.K. Roy Burman, (1973): Modernisation of Tribal people on Indias Borders, K.S. Mathur, (ed.), Studies in Social Change, Ethnographic and Folk Culture Society, U.P.

*****